आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2011-13
सृष्टि संवत् 1960853114
विक्रम संवत् 2070
दयानन्दाब्द 190

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र
E-mail : aryapsharyana@gmail.com (दूरभाष : 01262-216222) सम्पादक : सत्यवीर शास्त्री
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर
वर्ष : 10 अंक : 5 रोहतक, 28 जून, 2013 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

पाखण्ड-खण्डन आर्य महासम्मेलन सफीदों (जीन्द)

पाखण्ड के विरुद्ध आर्यसमाज का शंखनाद

❑ सञ्जीव मुआना, मन्त्री आर्यसमाज सफीदों (जीन्द)

नवजागरण के पुरोधा महर्षि दयानन्द ने सन् 1875 में आर्यसमाज की स्थापना इसी उद्देश्य को लेकर की थी कि वेदप्रचार के माध्यम से अज्ञान, अविद्यादि का नाश किया जाये, सत्यविद्या और सत्य ज्ञान का प्रचार-प्रसार किया जाये। ढोंग, गुरुडम, रूढ़िवादादि बुराइयों को समूल नष्ट करके एक सर्वथा दोषमुक्त, व्यसनमुक्त आदर्श समाज का निर्माण किया जाये। किंतु वर्तमान में रामपालदास जैसे तथाकथित संत एवं ढोंगी गुरु अंधविश्वास फैलाकर तथा महापुरुषों एवं उन द्वारा रचित महान् ग्रन्थों (गीता, सत्यार्थप्रकाशादि) के विरुद्ध भ्रामक दुष्प्रचार करके हमारे सामाजिक माहौल को बिगाड़ रहे हैं जिनके चलते भयानक दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं। यह सरकार की ढुलमुल नीति और अंध-विश्वास को रोकने के विषय में लचर रवैये का ही अप्रिय परिणाम था कि 2006 में करौंथा काण्ड-1 तथा मई 2013 में करौंथा काण्ड-2 घटित हुआ जिनमें इलाके के चार वीरों एवं वीरांगनाओं को पाखण्ड के विरुद्ध धर्म महायुद्ध में अपना बलिदान देना पड़ा—वीर सोनू (2006), उपाचार्य उदयवीर, संदीप कुण्डू, वीरांगना प्रोमिला देवी (तीनों 2013)।

विगत मास के करौंथा काण्ड पर ध्यान केन्द्रित करते हुये, समाज में फैलाये जा रहे अंधविश्वास के विरुद्ध जनजागरण हेतु तथा वेदप्रचार के लिये भावी रणनीति बनाने के लिये आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के निर्देश पर आर्यसमाज सफीदों तथा वेदप्रचार मण्डल जिला जीन्द के संयुक्त तत्त्वावधान में 16 जून 2013 (रविवार) को सुबह 7.30 बजे से दोपहर 12.30 बजे तक पुरानी अनाज मण्डी सफीदों में एक विशाल जिला स्तरीय पाखण्ड-खण्डन आर्य महा-सम्मेलन का आयोजन किया गया। यह महासम्मेलन वास्तव में पाखण्ड के विरुद्ध आर्यसमाज का शंखनाद, वेदप्रचार के लिये किया गया दृढ़संकल्प तो था ही, साथ में आर्यजनों की एकता, एकजुटता एवं संगठन शक्ति का भी प्रतीक था।

उक्त महासम्मेलन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान आचार्य बलदेव जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान आचार्य विजयपाल मुख्य अतिथि, महामन्त्री श्री सत्यवीर जी शास्त्री विशिष्ट अतिथि, सभा के उपप्रधान प्रो० ओमकुमार आर्य मुख्यवक्ता, सभा के वेदप्रचाराधिष्ठाता आचार्य अभयसिंह समारोह के सहवक्ता थे। भजनोपदेशक के लिये दिल्ली से श्री दिनेशदत्त आर्य की भजन मण्डली को आमन्त्रित किया हुआ था। चूंकि यह महासम्मेलन एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण आयोजन था इसलिये इस अवसर पर मञ्च संचालन का दायित्व भी प्रो० ओमकुमार आर्य को ही सौंपा गया था।

सर्वश्री स्वामी ब्रह्मानन्द, आचार्य राजेन्द्र, आचार्य अभयसिंह, सभामंत्री श्री सत्यवीर जी शास्त्री, आचार्य विजयपाल जी, जयसिंह राणादि ने समारोह को संबोधित किया। वैदिक कन्या गुरुकुल ऐंचरा कलां की कु० पूजा एवं कु० गीता ने भी महर्षि सम्बन्धी एक प्रेरणादायी गीत प्रस्तुत किया, बालक नवदीप (घोघड़िया) ने एक भजन के माध्यम से करौंथा-काण्ड के शहीदों को याद किया और तथाकथित संत रामपालदास के पाखण्ड का पर्दाफाश किया। आचार्य बलदेव जी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में करौंथा काण्ड के शहीदों को श्रद्धांजलि दी, पाखण्ड के विरुद्ध सतत संघर्ष जारी रखने की घोषणा की तथा स्पष्ट किया कि करौंथा काण्ड के लिये सरकार और प्रशासन की लापरवाही, ढोंगियों से उनकी मिलीभगत, जनभावना, जनाक्रोश की प्रशासन की ओर से अनदेखी और रामपालदास द्वारा किया गया भ्रामक दुष्प्रचार ही पूरी तरह जिम्मेदार था, आर्यसमाज और क्षेत्रवासियों ने तो पूरे प्रकरण में अत्यधिक धैर्य, सहनशीलता और जिम्मेदाराना व्यवहार का परिचय दिया। लगता है किन्हीं कारणों से प्रशासन ने रामपालदास के सन् 2006 के अत्यन्त आपत्तिजनक आचरण को नजरअंदाज किया, कोई विशेष सावधानी नहीं बरती जिसके परिणाम स्वरूप हमारे तीन व्यक्ति (एक महिला, दो पुरुष) इस काण्ड में शहीद हुये, सैकड़ों घायल हुये। रामपालदास की संदिग्ध गतिविधियों का एक पुख्ता प्रमाण यह भी है कि अभी पिछले दिनों उसके बरवाला स्थित आश्रम में जोधपुर (राजस्थान) जिले के बिलाड़ा थानान्तर्गत गाँव कपरेड़ा का जगदीश नामक व्यक्ति मृत पाया गया और उसके परिजनों ने संदेह जताया है कि उस (जगदीश) की हत्या की गई है। यह तो निष्पक्ष जांच ही बतायेगी कि सच्चाई क्या है?

इस अवसर पर करौंथा काण्ड में शामिल होने वाले अग्रलिखत उन प्रदर्शनकारियों को सम्मानित भी किया गया जो या तो गिरफ्तार होकर जेल में रहे, लाठीचार्ज में बुरी तरह घायल हुये, फ्रैक्चर आदि हुआ। इनको सभा की ओर से 5000/- रु० प्रति व्यक्ति तथा वेदप्रचार मण्डल जिला जीन्द की ओर से 1100/- रु० तथा एक-एक शॉल प्रति व्यक्ति प्रदान किया गया—

1. आचार्य राजेन्द्र (गुरुकुल कालवा), 2. ब्र० ज्ञानप्रकाश, 3. ब्र० मनीष, ब्र० भीम, 5. ब्र० तेजेन्द्र, 6. ब्र० बालकिशन, 7. श्री सुरेन्द्र, 8. श्री संतराम, 9. श्री राजपाल (सभी कालवा)। 10. श्री चतरसिंह (सिवाह), 11. श्री अनिल (भिड़ताना), 12. श्री धर्मसिंह कलावती, 13. प्रो० ओमकुमार आर्य (जीन्द) 14. मा० रायसिंह आर्य, 15. श्री शेरसिंह, 16. श्री रामकुमार (तीनों घोघड़िया)।

इनमें से कुछ व्यक्ति महासम्मेलन में नहीं आ सके थे उनकी सम्मान राशि, शालादि उनके पास भेज दिये जायेंगे। भूलवश यदि कोई अन्य व्यक्ति रह गया होगा तो उचित जांच-पड़ताल करके उसे भी शामिल कर लिया जायेगा। इन सबके तप, त्याग और जो कष्ट इन्होंने सहे उसके लिये हम इनके आभारी हैं।

आयोजन का प्रारम्भ सुबह यज्ञ के साथ हुआ जो समाज के पुरोहित आचार्य नन्दकिशोर जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। समाप्ति पर आर्यसमाज सफीदों के प्रधान श्री यादविन्द्र बराड़ ने सभी के प्रति आभार ज्ञापित किया। उन्होंने यह भी घोषणा की कि सफीदों उपमण्डल में जहाँ भी प्रचार कार्य की आवश्यकता हो, आर्यसमाज सफीदों

क्रमशः पृष्ठ सात पर....

प्रभु और उसके लोक

❑ आचार्य वेदमित्र, पातञ्जल योगाश्रम, भऊ आर्यपुर, रोहतक 9355675408

महर्षि दयानन्द योगी का आकाश गमन वेदभाष्य में वर्णन करते हैं— '**पृष्ठात् पृथिव्या अहमन्तरिक्षमारुहमन्तरिक्षाद्दिवमारुहम्**' अन्तरिक्ष में ही नहीं वह द्यौ लोक तथा परम ज्योति स्वरूप प्रभु के लोक में भी पहुँच जाता है। मन्त्र का अगला भाग यही कह रहा है—**दिवो नाकस्य पृष्ठात्स्वर्ज्योतिरगाम अहम्**। जन्मते ही बालक भूख के बस हो दूध हेतु रोता है। पीकर पुन: दूध की चाहना अन्य किसी इन्द्रिय की कोई जरूरत नहीं बस शरीर के सौष्ठव की लग्न। अन्य कोई लग्न नहीं। माँ के गर्भ में बूँद भर शरीर का उत्कर्ष दिनोदिन बढ़ता जाता है और यह तब तक जारी रहता है जब तक पूर्ण युवावस्था नहीं पा लेता। पूर्व में यानि बालक पार्थिव बुद्धि ही करता रहता है। 5-7 वर्ष के उपरान्त मन का विकास प्रारम्भ होता है। अनेक रसों के स्वाद, रंग व रुचि का विकास भी होता है। जो 3-5 वर्ष पूर्व ना के बराबर था वह कहाँ से शरीर के भीतर पैदा हो जाता है। वेद भगवान् ही इसका समाधान यों करते हैं—**इयं समित पृथिवि द्यौर्द्वितीयोतान्तरिक्षं समिधा पृणाति**। पार्थिव शरीर में मन आदि सूक्ष्म शरीर से ही चेष्टा व कर्म होते हैं। पार्थिव शरीर में न दिखने वाले मन से जो चेष्टा होती है वह उत्कृष्ट शक्ति हमारे शरीर की गति व चेष्टा का कारण है। वेद में कहा है—**यद् अनस्था अस्थवन्तं विभर्षि**। हड्डी वाले अस्थि-पिंजर को बिना हड्डी वाले ने थामा हुआ है। बिजली के कारण बाह्य पंखा घूम रहा है। बिजली नहीं तो कोई गति नहीं। संसार का बाह्य स्वरूप भी उस प्रभु के उन्नीस सूक्ष्म तत्त्वों से गतिमान है। प्रभु ने पृथिवी को सूर्य द्वारा गति प्रदान की है। विश्व के पार्थिव जगत् को प्रकाशमान द्यौलोक से ऊर्जा मिल रही है। एक सूर्य 7 ग्रहों में प्राण आदि चेष्टा करवा रहा है। जिस प्रकार खेत में आग जलती है तब तक सूक्ष्म राख के अणु आकाश में गतिमान रहते हैं। आग बुझते ही सबका भ्रमण खत्म होकर नीचे पतन हो जाता है। अग्नि में पदार्थों के धारण की शक्ति है। **अग्निर्वै बलम्**। अग्नि में बल है।

अन्त:करण, मन, बुद्धि भी आग्नेय हैं। इस ऊर्जा से शरीर की चेष्टाष्ट होती हैं। शरीर में अन्नादि के खाने से अग्नि बढ़ती है। उस जाठर अग्नि के द्वारा प्राण, अपान आदि क्रियाएँ हो रही हैं। अन्नमय कोष और मनोमय कोष के बीच में प्राणमय कोष को समझा जा सकता है। प्राणायाम को महर्षि मनु इसलिए परमधर्म कह रहे हैं। वेद भगवान् इसे अन्तरिक्ष कह रहे हैं। द्यौ लोक और पृथिवी लोक के मध्य में अन्तरिक्ष लोक अनन्त है। यह भूलोकों तथा द्यौलोकों को भी धारण किये हुए है। आज के वैज्ञानिकों ने अन्तरिक्ष के ऐसे भागों को खोजा है जिनमें बहुत-बहुत रहस्य हैं। इन ब्लैक होल में बड़े से बड़े ग्रह समा रहे हैं और इनमें से निकल भी रहे हैं। वेद भगवान् भी कह रहे हैं—**नाभ्यां आसीदन्तरिक्षं शीर्षो द्यौ: समवर्त्तत**। यजु० 36.6 मनुष्य की नाभि को अन्तरिक्ष सदृश्य कहा है। कठोर से कठोर पदार्थ पेट में पड़कर गल जाते हैं और नाभि की साथ धरा में पचकर अन्न-रक्तादि में परिणत हो जाता है यानि नई-नई उत्पत्ति भी नाभि द्वारा होती है। सुश्रुत में इनका वर्णन है—**षष्ठी पित्तधरा नाम या कला परिकीर्त्तिता। पक्वामाशयमध्यस्था ग्रहणी सा प्रकीर्त्तिता॥** अन्तरिक्ष में वायु भ्रमण से वर्षा आदि और उनका कारण जो बिजुली है का प्रत्यक्ष होता है। इन्द्र या सूर्य से मेघ, वर्षा से धरती पर अन्न आदि पार्थिव पदार्थों को पैदा होने की परम्परा चलती रहती है। सो शरीर में प्राणादि से चेतना यानि भौतिक अन्न से नाभि में उत्पन्न प्राणादि ऊर्जाओ से हृदय, मस्तिष्क ऊर्जा पाये हुए हैं। ब्रह्मचर्य सूक्त में ब्रह्मचारी पार्थिव शरीर और बुद्धिरूपी द्यौ में ईश्वर की शक्ति देखता है—**ब्रह्मचारीष्णंश्चरति रोदसी उभे तस्मिन्नदेवा: संमनसो भवन्ति। स दाधार पृथिवीं दिवं च स आचार्यं तपसा पिपर्ति॥** (अथर्व०) वहीं वैज्ञानिकों को तो ब्लैक होल ने ही चुप कर दिया। कैसे-कैसे विशाल ब्रह्माण्ड नित अस्तित्व में आ रहे हैं। मरणधर्मा जड़ प्रकृति नयी-नयी-सी दिख रही है। वेद भगवान् ही यह वर्णन कर रहे हैं—**यो मर्तेषु अमृतं ऋतावा देवो देवेषु अरति निधायि। होतां यजिष्ठो महना शुच्ध्यै हव्यै: अग्निमनुष ईरयध्यै॥** ऋ० 4.2.1 अनन्त ब्रह्माण्ड में कोई सूर्य छोटा कोई बड़ा यह उस प्रभु ने बनाया है। बड़े सूर्य से उसके ग्रह भी अनेक जीवों के शरीर व अन्न आदि धारण किये हुए हैं उसी प्रकार प्रत्येक जीव को बुद्धि आदि की व्यवस्था भी उसने की है। किसी की तुच्छ और किसी की उत्कृष्ट। सूर्य आदि लोकों की तरह बुद्धि आदि सूक्ष्म शरीर जीवों को परमात्मा ने दिये हैं।

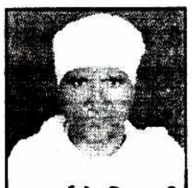
आचार्य वेदमित्र जी

एक ऋतम्भरा बुद्धि ऐसी जिसने जगत् के अस्तित्व को यानि जन्म के कारण को जान लिया और एक बुद्धि यह भी सामर्थ्य नहीं रखती कि अग्नि में नहीं कूदना। पतंगा अग्नि में जल मरता है। विषयों के आकर्षण की इस कहानी को योगी जान लेता है, वह ब्रह्मचर्य से अमृत पा लेता है। विषय से मृत्युरूपी दु:ख को जान जाता है, इसलिए ऋषि दयानन्द वेदभाष्य में अन्तरिक्ष को चढ़ जाता है कहते हैं।

पार्थिव शरीर द्वारा पार्थिव इन्द्रिय सुख के संसार संचरण स्रोत को समझकर वह आत्मस्वरूप को भी प्राप्त कर लेता है। यह अपने स्व का लोक सबसे उत्कृष्ट है जिसका अन्त नहीं है उसको पा लेता है। **परित्य भूतानि परित्य लोकान् परित्य सर्वा: प्रदिशो दिशश्च। उपस्थाय प्रथम-जाम ऋतस्य आत्मना आत्मानमभि सं विवेश॥** समस्त ब्रह्माण्ड को उस न दिखने वाले प्रभु ने धारण किया है। पार्थिव शरीरों को कितना बढ़ाया जावे वे मृत्यु को अवश्य प्राप्त होंगे। आत्मा का न जन्म है न मृत्यु। अमरता की चाहना करने वाले शरीर सुख, इन्द्रिय सुख, की झूठी लालसा में नहीं पड़ते। पार्थिव में आत्मा से वृद्धि है।

परमात्मा ने ब्रह्माण्ड की तरह शरीर में भी भूर्भुव: स्व लोक यानि भौतिक शरीर, सूक्ष्म शरीर व कारण शरीर का सामंजस्य किया हुआ है। **अष्टा चक्रा नवद्वारा देवानां पुरयोध्या। तस्यां हिरण्यय: कोश स्वर्गो ज्योतिषावृता॥** आठचक्र मूलाधार सहस्रादि चक्र, इन्द्रिय तथा मन, बुद्धि आदि ज्योतियाँ वाली अविज्ञेया पुरी का ज्ञान धीरे-धीरे हो जाता है। अन्तरिक्ष के 28 नक्षत्र शरीर में भी दस प्राण, इन्द्रिय, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, विद्या, स्वभावादि ऋषि दयानन्द ने **अष्टाविंशानि शिवानि०** वेदभाष्य में गिनाये हैं। ब्रह्मचारी इन देवों को ऋतम्भरा बुद्धि से जान लेता है। **ब्रह्मचारीष्णंश्चरति रोदसी उभे तस्मिन्नदेवा: संमनसो भवन्ति।** उनको जानता ही नहीं उन दिव्य शक्तियों से दिव्यता प्राप्त कर लेता है। उसकी वाणी वेदानुसरण करती है, उसका मन शिवसंकल्प वाला होता है। काम, क्रोध, द्वेष आदि करने से जहाँ मानष विकृति प्राणों में भी विकृति आ जाती है। प्राणों की विकृति से चक्रवात अंधड़ तूफानों से अयोध्या में अराजकता आ जाती है। जहाँ सत्याचरण से देव राज्य था वहाँ असत्य का राज्य हो अशान्ति हो जाती है। एक दुराचारी पूरी पृथिवी को दु:ख में धकेल देता है। पृथ्वी पर सुख व धर्म का साम्राज्य वेद के मन्त्रों के आचरण से होता है जो सत्याचरण व तप से प्राप्त होता है। वेद भगवान् भीइसका संकेत करते हैं—ब्रह्मचारी समिधा मेखलया श्रमेण तपसा लोकाँ पिपर्ति। शरीर, मन, बुद्धि आदि को पुरुषार्थ से व तप से पवित्र करने पर ही परमानन्द प्राप्त होता है। आओ व्रत लेकर अपने शुद्धतम स्वरूप को प्राप्त करें। **यो भूतानां अधिपत्ति यस्मिन्नलोका अधिश्रिता:। य ईशे महतो महाँस्ते गृह्णामि त्वाम् मयि गृह्णामि त्वामहम्॥** वेद भगवान् मानव को दिये गये महत्त्व का वर्णन कर कह रहे हैं कि तुझे ऋतम्भरा जो दी है उससे भौतिक जगत्, सूक्ष्म व कारण जगत् को जान और उस सबके आधार मुझ को भी जान। प्रभु को जानने पर सब रहस्य खुल जाते हैं।

युवा चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

आर्यसमाज शोभापुर जिला महेन्द्रगढ़ के तत्त्वावधान में युवा चरित्र निर्माण एवं योगासन, प्राणायाम व ध्यान शिविर का आयोजन दिनांक 11 जून 2013 से 15 जून 2013 तक बड़ी सफलता के साथ आयोजित किया गया जिसमें योग्य व्यायाम शिक्षक श्री धर्मवीर आर्य के द्वारा आसन, प्राणायाम व ध्यान का प्रशिक्षण दिया गया व आचार्य श्री स्वदेश जी महाराज मथुरा, आचार्य श्री हरीप्रसाद जी नोएडा (यू.पी.), आचार्य श्री अभयदेव जी आर्ष गुरुकुल खानपुर तथा श्री सतीश आर्य रसूलपुर के द्वारा युवाओं को ईश्वरभक्त, देशभक्त, वीर, चरित्रवान् बनने, बुजुर्गों का सम्मान करने, दुर्व्यसनों से दूर रहने, दूसरे की बहन-बेटी को अपनी बहन-बेटी समझने का संकल्प दिलाया तथा ईश्वर, जीवात्मा, प्रकृति के बारे में युवकों ने बहुत शंका-समाधान किया। शिविर में सैकड़ों बच्चों ने भाग लिया।

—रोशनलाल आर्य, आर्यसमाज शोभापुर, तह. नारनौल (महेन्द्रगढ़)

प्रभु शरण में

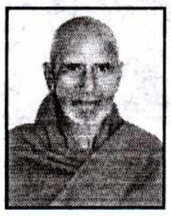

-: वेद-मन्त्र :-

यथा गौरो अपा कृतं तृष्यन्नेरिणम्।
आपित्व नः प्रपित्व तयमा गहि कण्वेषु सु सचा पिब॥

(साम० 10/251)

शब्दार्थ—[यथा] जैसे [गौरः] मृग [तृष्यन्] प्यासा हुआ [अव-ईरिणम्] दूर मरुभूमि को [अपाकृतम्] अधिक दूर किया अर्थात् दिखाई दिया। [तूयम्] शीघ्र [नः] हमारी [आपित्वे] मित्रता में [प्रपित्वे] समर्पण में [आगहि] आ जा [कण्वेषु] बुद्धिमानों में [सचा] मेरे साथ [सुपिब] उत्तमता से पान कर।

भावार्थ—प्रकृति की ओर न भागकर ईश्वर अर्पण करें।

व्याख्या—प्रभु जीव को उपदेश देते हैं कि तू तो उसी प्रकार आनन्द को प्राप्त करने के लिये भटकता रहता है जैसे एक प्यासा मृग बहुत दूर पानी के लिये मरुभूमि की ओर दौड़ता है। सुदूर चमकते बालू को पानी समझकर दौड़ता है। वहाँ पहुँचकर जल का दृश्य और आगे दिखाई देता है। आगे दौड़ने पर जल और आगे दिखाई देता है। प्यास बुझाने की आशा से वह भागता ही रहता है। वह न पानी पाता है, न प्यास शान्त कर पाता है। अन्त में प्यासा ही मर जाता है। उसके उद्योग में कोई कमी नहीं, परन्तु व्यर्थ का श्रम है। इसी प्रकार मनुष्य भी अपने आनन्द की प्यास को शान्त करने हेतु धन की ओर दौड़ लगाता है। उसे इच्छानुसार नहीं मिल पाता। उत्तरोत्तर धन की प्यास बढ़ती रहती है। वास्तव में धन में आनन्द की प्राप्ति होती ही नहीं। वह कमाता-कमाता मृग के समान मर जाता है।

प्रभु इस मन्त्र में जीव को कहते हैं कि तू मेरी मित्रता में आ जा। मेरी शरण में आ। प्रकृति तो रेतीले प्रदेश के समान है। मेरी शरण में ही तू आनन्द प्राप्त कर पायेगा। मेरे पर अर्पण करने पर तेरे योगक्षेम का सारा भार मेरे पर ही आ जायेगा। तू सब प्रकार की चिन्ताओं से मुक्त हो जायेगा। बुद्धिमानी इसी में है कि तू भी बुद्धिमान् मनुष्यों में गिना जाने वाला बन जा। मेरे पर 'ईश्वरप्रणिधानाद्वा' के अनुसार समर्पित हो जा। उत्तमता से आनन्द का पान कर।

आचरण करें—

श्रेय-मार्ग को अपना कर मोक्षधाम पायेगा।
उलझ गया प्रकृति फंदे में नरक में गोते खायेगा॥
छोड़ आलस्य को तत्काल लगा ले योग में गोता।
अज्ञान-अन्धकार के बोझे को रहेगा कब तलक ढोता॥

—आचार्य बलदेव

बाघपुर में यज्ञ-सत्संग सम्पन्न

आर्यसमाज बाघपुर (झज्जर) के आर्य कार्यकर्ताओं ने दिनांक 24.6.2013 को गाँव में सामूहिक यज्ञ-सत्संग का आयोजन किया। सर्वप्रथम डॉ. राजपाल बरहाणा के ब्रह्मत्व में पाँच किलो घी व पाँच किलो सामग्री से बृहद् यज्ञ का अनुष्ठान हुआ। श्री तेजवीर जी ठेकेदार ने यज्ञ के आयोजन में विशेष भूमिका निभाई, माता-बहिनों ने बड़ी श्रद्धापूर्वक यज्ञ हेतु घी दान दिया तथा सभी ने यज्ञ में आहुतियाँ अर्पित कीं।

यज्ञोपरान्त सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें श्री ओम्प्रकाश मन्त्री आर्यसमाज बेरी ने पाखण्ड के विरुद्ध अपने विचार रखे व श्री महेन्द्रसिंह जी प्रधान आर्यसमाज बेरी ने ईश्वर भक्ति का एक सुन्दर भजन प्रस्तुत किया तथा यज्ञ व सत्संग के महत्त्व पर प्रकाश डाला, तत्पश्चात् डॉ. राजपाल बरहाणा का सबके आग्रह पर यज्ञ की श्रेष्ठता व कर्मफल व्यवस्था तथा पारिवारिक सुख के हेतु विषयों पर विशेष व्याख्यान हुआ। शान्तिपाठ व जयघोष से पूर्व श्री महेन्द्रसिंह प्रधान आर्यसमाज बेरी ने डॉ. राजपाल बरहाणा का समय देने पर विशेष धन्यवाद किया एवं सभी यज्ञ-सत्संग में उपस्थित स्त्री-पुरुषों का भी धन्यवाद किया। गाँव की तरफ से सभी को हलवे का प्रसाद वितरित किया गया व आर्यसमाज बेरी को 100/- रु० तथा आर्यसमाज बरहाणा को 1100/- रु० दक्षिणा रूप में भेंट किये।

—मन्त्री, आर्यसमाज बाघपुर (झज्जर)

व्यायाम एवं सदाचार प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

गाँव बरहाणा (झज्जर) में दिनांक 17.06.2013 से 23.06.2013 तक स्थानीय आर्यसमाज द्वारा आयोजित सात दिवसीय व्यायाम एवं सदाचार प्रशिक्षण शिविर हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। सिद्धान्ती भवन आर्यसमाज मन्दिर बरहाणा के प्रांगण में गाँव के 50 युवकों ने शिविर में भाग लेकर निरन्तर सात दिन तक ब्र० जसवीर शास्त्री व ब्र० राहुल आर्य गुरुकुल झज्जर के दिशानिर्देश में आसन, प्राणायाम, दण्ड-बैठक, स्तूप निर्माण व कराटे का प्रशिक्षण लिया व डॉ० राजपाल बरहाणा द्वारा प्रतिदिन आयोजित यज्ञ-सत्संग व बौद्धिक कार्यक्रम के माध्यम से ईश्वर के स्वरूप, ईश्वरोपासना की विधि व लाभ, सदाचार का महत्त्व, स्वाध्याय-सत्संग की महिमा, विद्यार्थी के कर्त्तव्य, मातृ-पितृभक्ति की उपादेयता, लगन व परिश्रम के चमत्कार नशा विनाश का द्वार, मानव जीवन की श्रेष्ठता व उसका लक्ष्य आदि विषयों का ज्ञान प्राप्त कर मानवीय गुणों को धारण करने के प्रतीक यज्ञोपवीत को संकल्प लेकर धारण किया।

दिनांक 23.6.2013 रविवार को शिविर का समापन समारोह प्रातः 8 बजे से प्रारम्भ हुआ। यज्ञ के उपरान्त शिविर के युवकों ने ईश्वरभक्ति व देशभक्ति के मनोहर भजन प्रस्तुत किये तथा उपस्थित दर्शकों के समक्ष अपने शारीरिक विभिन्न व्यायाम कार्यक्रमों का आकर्षक प्रदर्शन किया। उपस्थित जनों ने तालियों की उच्च ध्वनि तथा पुरस्कार द्वारा उनका सम्मान किया। दिल्ली से पधारे समारोह के मुख्य अतिथि श्री नितिन अहलावत महामन्त्री दिल्ली बार एसोसिएशन ने शिविर के 32 होनहार युवकों को आर्य साहित्य से पुरस्कृत किया एवं उन्हें जीवन में सफल होने की प्रेरणा देते हुए अपना आशीर्वाद दिया। साथ ही अपने आर्यसमाज बरहाणा के इस आयोजन एवं पूर्णतया निःशुल्क संचालित श्री सिद्धान्ती धर्मार्थ आयुर्वेदिक औषधालय की प्रशंसा करते हुये 5100 रुपये दान स्वरूप देते हुए आगे सहयोग का आश्वासन दिया। सम्मान समारोह में श्री मदनलाल शास्त्री प्राध्यापक मातनहेल, श्री ओम् अहलावत बरहाणा, चन्द्रपाल माजरा तथा पण्डित रामकुमार भजनोपदेशक आदि ने भी अपने विचार रखे। गाँव में दो दिन तक रात्रि-प्रचार का कार्यक्रम सिद्धान्ती भवन में संचालित औषधालय के वैद्य श्री सुखीराम जी आर्य के सहयोग से आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के भजनोपदेशक श्री रामकुमार आर्य द्वारा संचालित किया गया। शिविर के संचालन में यद्यपि सभी ग्रामवासियों का सहयोग रहा किन्तु श्री वैद्य सुखीराम आर्य, श्री टेकराम व श्रद्धानन्द आर्य, प्रताप साहब बरहाणा के साथ-साथ श्री मदन शास्त्री मातनहेल, श्री महेन्द्र सिंह प्रधान आर्यसमाज बेरी व मन्त्री श्री ओम्प्रकाश एवं श्री चन्द्रपाल माजरा का विशेष सहयोग रहा। शिविर के समापन समारोह में डीघल, धान्धलान, बेरी, लकड़िया, दूबलधन, वजीरपुर, बाघपुर, एम.पी. माजरा व पलड़ा के आर्य कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया तथा उपस्थित जनों ने 30,000/- रु० दानरूप में दिये। वैदिक उद्घोष एवं शान्तिपाठ के साथ शिविर समारोह सम्पन्न हुआ। सभी आगन्तुकों को भोजन कराकर ससम्मान विदा किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को 3500/- रु० का सहयोग दिया गया।

नोट—आर्यसमाज बरहाणा द्वारा सन् 1980 से लगभग प्रतिवर्ष पूर्णतया निःशुल्क सात दिवसीय शिविर आयोजित किया जाता है एवं सन् 1999 से श्री जगदेवसिंह जी सिद्धान्ती की स्मृति में श्री सिद्धान्ती आयुर्वेदिक औषधालय निःशुल्क संचालित किया जा रहा है जिसके संचालन सहयोग हेतु सिद्धान्ती जी के भ्राता स्व० चौ० वेदमित्र जी ने अपनी साढ़े नौ एकड़ कृषिभूमि व स्थायी निधि हेतु 3,50,000/- दान दे रखे हैं।

—मन्त्री आर्यसमाज बरहाणा

आवश्यक सूचना

वेद, सत्यार्थप्रकाश, महर्षि दयानन्द एवं अन्य महापुरुषों के विरुद्ध रामपालदास द्वारा किये जा रहे दुष्प्रचार की किसी भी प्रकार की कोई सामग्री जैसे-सी.डी., इश्तिहार आदि किसी विद्वान्/सज्जन के पास उपलब्ध है तो कृपया 15 दिन के अन्दर-अन्दर सभा कार्यालय में डाक द्वारा अथवा ईमेल से भेजें अधिक जानकारी हेतु फोन नं० 9416055044 पर सम्पर्क करें। धन्यवाद।

निवेदक : प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

कर्म करना अनिवार्य

❑ लालचन्द चौहान, # 591/12, पंचकूला (हरयाणा)

आर्यावर्त के इतिहास में एक समय आया जब कर्मरूपी घोड़े की लगाम को बिल्कुल छोड़ दिया। कर्म के द्वारा ही सुख-दुःख को होता देखकर ईश्वर की ओर से विमुखता-सी पैदा होने लगी। यज्ञ के नाम पर असंख्य अत्याचार होने लगे, पशुओं की बलि देने लगे। धर्म के नाम पर अनेक पंथ चल पड़े और ईश्वर को छोड़ लोग पंथ-संचालकों को ही अपना इष्टदेव भगवान् मान पूजा करने लगे। देश का कितना बड़ा दुर्भाग्य था और अब भी है। वेदज्ञान के अभाव में अन्धविश्वास और कपोलकल्पित बातों का प्रचार हुआ। ईश्वर की गर्त में खो गया, अत्याचार बढ़ गये, नारी का अपमान, नारी को पढ़ने का अधिकार नहीं। कितनी बुराइयाँ पनप गईं, जिनकी कोई गिनती नहीं।

महर्षि दयानन्द जी ने देश की बिगड़ी दशा को देखा, देश में गरीबी, अंग्रेजी शासकों के जुर्म, देश की परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ, सिसकियां ले रहा था। महर्षि को यह अवस्था देश की देखकर बड़ा ही दुःख हुआ और विचार किया कि देश को उक्त परिस्थितियों से कैसे उभारा जाये? महर्षि देश से अन्धविश्वास, पाखण्ड, अंग्रेजी शासन को मिटाने में जुट गये। अपना सर्वस्व त्याग कर वेदप्रचार, पाखण्ड का पुरजोर खण्डन, देश को स्वतन्त्रता दिलाने का अभियान आरम्भ कर दिया। यह काम इतना आसान नहीं था, अंग्रेज अपनी जड़ें मजबूत कर चुके थे। देश के ही कुछ देशद्रोही लोग अंग्रेजी शासन की जड़ों को पानी देने का काम कर रहे थे, पाखंडियों ने लोगों को अन्धकार में धकेल अपनी रोटी-रोजी का अच्छा व्यवसाय पनपा रखा था। इन सब बुराइयों के साथ टक्कर लेना कोई आसान काम नहीं था, परन्तु महर्षि ने किसी की भी तनिक भी परवाह न की, न तो पाखण्डी हमलावरों (ईंट, पत्थर फैंकने वालों, सर्प छोड़ने वालों, जहर पिलाने वालों, धमकियां देने वालों आदि-आदि) की। महर्षि दयानन्द ने अपने कर्त्तव्य कर्म को समझा। देश के प्रति, समाज के प्रति, पशु-पक्षियों, जानवरों के प्रति क्या कर्त्तव्य है और दिन रात कर्त्तव्य पालन में अपना सारा जीवन अर्पण कर दिया। मनुष्य के सामने जो जगत् दृष्टिगोचर हो रहा है, उसके दो विभाग हैं। पहला मानुष विभाग, जिसका वह एक अंग है और दूसरा दिव्य विभाग है, जिसमें सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र, पृथिवी, जल, वायु, विद्युत्, अग्नि, पर्वत, जंगल, पेड़-पौधे, वनस्पति आदि भिन्न पदार्थ प्रभु की अन्तर्व्यापिनी, अव्यक्त, अपार शक्ति से प्रेरित होकर, संसार के विविध व्यवहारों में सहायक हो रहे हैं और निरन्तर कल्याण कार्यों में लगे हैं। ईश्वर के द्वारा बनाए गए सभी पदार्थ अपने-अपने कर्म करने निरन्तर लगे हुए हैं, एक सैकिण्ड का भी विराम नहीं है।

देखिये! सूर्य निरन्तर अपना कर्म कर रहा है, प्रकाश से अन्धकार का विनाश, अपने तेज से दुर्गन्ध का नाश और फूल-फलों से अपनी तापशक्ति से सुगन्ध को प्राप्त करता है। सूर्य समुद्र, नदी, नालों, तालाबों, झीलों आदि से अपने तेज के कारण पानी का वाष्पीकरण कर बादल के रूप में एकत्रित करता है, बादलों से वर्षा होती है। सूर्य कितना शुभ कर्म करता है, यदि दुर्गन्ध का सूर्य अपनी तापशक्ति से विनाश न करे, फल-फूलों से सुगन्ध प्राप्त न करे, तो प्राणियों का जीना दुर्लभ हो जाता। वर्षा के लिये जल बादल के रूप में न बनता तो वर्षा कैसे होती और वर्षा न होती तो अन्न, धन-धान्य, वनस्पति, औषधि कैसे उत्पन्न होती? पृथिवी न होती तो समुद्र, नदी, नाले, पेड़-पौधे, अन्न औषधि कहां पर होते और उगते। जरा सोचिये! पृथिवी दिन-रात बनाती है, 24 घण्टे में एक चक्कर लगाती है और निरन्तर अपने कर्म में व्यस्त रहती है। देखिये! सूर्य कितना परोपकार का कार्य करता है, पृथिवी कितनी सहनशील है। मानव के पशु-पक्षियों, जानवरों के कितने अत्याचार सहन करती है। मनुष्य खदानों को

शेष पृष्ठ पाँच पर....

न कर्मणामनारम्भान्नैष्कर्म्यं पुरुषोऽश्नुते। भ०गी० 3/4 कर्म करना अनिवार्य है, कर्मों के आरम्भ न करने से मनुष्य कर्म से छुटकारा नहीं पा सकता और न ही कर्म का त्याग कर देने से सिद्धि को ठीक-ठीक प्राप्त होता है, क्योंकि कोई भी कभी भी कोई क्षण बिना कर्म किये नहीं ठहर सकता। सत्त्व, रजस् और तमस् गुणों द्वारा विवश होकर मनुष्य कर्म करता रहता है।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत समा। यजु० 40/2 मनुष्य कर्म करता हुआ पूर्ण आयु जीने की कामना करे, कर्म छोड़ देने से नहीं छूटता, अधिक बन्धनों में फँसना पड़ता है। श्रीकृष्ण जी गीता में उपदेश करते हैं—**नियतं कुरु कर्म त्वं कर्मज्यायो ह्यकर्मणः।** भ०गी० 3/4 तू निश्चय करके कर्म कर, क्योंकि न करने से करना अधिक अच्छा है और तू बिना कर्म किये एक क्षण भी नहीं रह सकता। कर्म से मत घबराओ, कर्म करना सीखो, कीचड़ वाले मार्ग से डरो नहीं, उसमें से निकल कर जीना सीखो। ज्ञानपूर्वक, अनासक्त होकर, नर बनकर, कर्म करते रहने से कर्म मोक्ष में सहायक बन जाता है। ज्ञान और कर्म का परस्पर विरोध तो दूर रहा, वे तो एक ही चित्र के दो पार्श्व हैं? दोनों मिलकर ही एक पूर्ण जीवन बनाते हैं।

अव्यसश्च व्यचसश्च बिलं विष्यामि मायया। अथर्व० 19/8/1 प्रकृति और परमात्मा फैले हुए हैं और जीव अणु हैं, तीनों तत्त्व सत्त्व, रजस् और तमस् का ज्ञान प्राप्त करके कर्म में प्रवृत्त होना चाहिये। **विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह।** यजु० 40/14 ज्ञान रहित कर्म बन्धन का हेतु होने से अविद्या के नाम से वर्णन किया गया है। कर्मवीर मृत्यु के भय से मुक्त होकर ज्ञान और विवेक द्वारा नित्य परमपिता परमात्मा से सम्बन्ध जोड़ता है अर्थात् ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना करता है। उपासना के महत्त्व को समझने के लिए बुद्धि के विस्तार और विवेक की आवश्यकता है, बिना बुद्धि के विकास और विवेक के कर्मों को ठीक-ठीक नहीं समझा जा सकता। वेदशास्त्रों में अनन्त ज्ञान है, परन्तु बड़े ही दुःख की बात है कि हमने वेदशास्त्रों को पढ़ना ही छोड़ दिया और शुभकर्मों से अनभिज्ञ हो गए और अविद्या के कारण अधर्म कर्मों में संलिप्त हो गए।

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का त्रिवार्षिक साधारण अधिवेशन (चुनाव) दिसम्बर 2013 को होना है, इसलिए सभा से सम्बद्ध सभी आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि वे अपना तीन वर्षीय (2010-2011, 2011-2012, 2012-2013) रिकार्ड जैसे कि सभासदों का सदस्यता रजिस्टर, वार्षिक शुल्क रजिस्टर, साप्ताहिक सत्संग में उपस्थिति रजिस्टर, कार्यवाही रजिस्टर आदि विवरण तैयार रखें।

सभामन्त्री श्री सत्यवीर शास्त्री, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता आचार्य अभयसिंह कुण्डू, श्री सत्यव्रत शास्त्री जून 2013 मास से आर्यसमाजों का रिकार्ड निरीक्षण करने हेतु दौरा कर रहे हैं। जो आर्यसमाजें अपने रिकार्ड का निरीक्षण नहीं करवायेंगी तथा जिनका रिकार्ड ठीक करने की हिदायत देने पर भी ठीक नहीं किया जायेगा उन आर्यसमाजों के प्रतिनिधि फार्म स्वीकार नहीं किये जायेंगे। कृपया अपनी आर्यसमाज का रिकार्ड शीघ्र तैयार करके सभा के उपरोक्त अधिकारियों से निरीक्षण अवश्य करवा लें।

—**आचार्य विजयपाल**, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

भजनोपदेशकों के लिए सभा से सम्पर्क करें—

प्रदेश की सभी आर्यसमाजें अपने आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव या अन्य विशेष कार्यक्रमों के लिए भजनोपदेशकों के प्रोग्राम सुनिश्चित करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक से एक मास पूर्व पत्र द्वारा सम्पर्क करें।

—**सभामन्त्री**

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1. आर्यसमाज बालधन कलां जिला रेवाड़ी — 6 से 7 जुलाई 2013
2. जिला वेदप्रचार मण्डल महेन्द्रगढ़ के तत्त्वावधान में जिला स्तरीय आर्य महासम्मेलन स्थान-दौंगड़ा अहीर (महेन्द्रगढ़) — 6 से 7 जुलाई 2013

—**प्राचार्य अभय आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता**

आर्यसमाज का धुरन्धर कार्यकर्त्ता चला गया

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

गतांक से आगे....

पानीपत में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा संचालित शिक्षण संस्थाओं से आर्यसमाज के प्रचार में मदद मिल रही थी और उधर संदीप भी वापसी के लिए बेताब था। प्रसंगानुकूल मैंने सभा व आर्य बाल भारती विद्यालय के अधिकारियों से बात की और धर्मवीर संदीप का फिर से पानीपत में आना हुआ। मैंने उसको बताया कि आपकी अनुपस्थिति में हम गाँव-गाँव प्रचार का कार्य करते थे। वह भी आते ही इस कार्य में लग गया। अनेक गाँव में उसने कार्यक्रम करवाये, सैकड़ों लोगों को आर्यसमाज से जोड़ा।

एक बार उसने अहर (पानीपत) गाँव में आर्यसमाज का प्रचार करवाया। प्रचार में सभा के अन्तरंग सदस्य डॉ. राजपाल जी भी उपस्थित थे। वे बोले गाँव में प्रचार में इतनी संख्या कभी नहीं होती। मैंने कहा कि यह सब संदीप की मेहनत है।

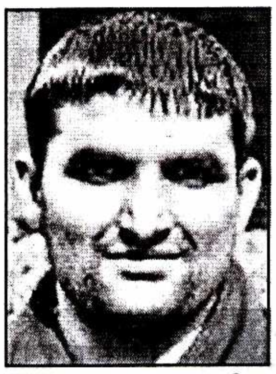

शहीद संदीप आर्य

शाहपुर, कैथ, चिड़ाना, अहर, माण्डी, इसराना, काबड़ी, बड़ौली, नौल्था, बबैल, उग्राखेड़ी, सिवाह, आट्टा आदि पानीपत जिला के आर्य उससे बेहद प्यार करते थे जो उसकी कर्मठता का परिचायक है। वह 11.11.2011 को पानीपत आया था। अप्रैल 2012 को सभा द्वारा मेरी नियुक्ति भी जब पानीपत संस्था में हुई तो संदीप के उत्साह को मानो पंख लग गए। वह बार-बार हंसकर कहता था कि जिस दिन से आप पानीपत आए हो उस दिन से आपने प्रचार वाहन रुकने नहीं दिया है, यही हमारा घर बन गया है। यहाँ आर्य बाल भारती विद्यालय के पीछे लगभग तीन एकड़ मैदान पर कुछ लोग अवैध अधिकार जमाए थे। वे वहाँ ट्रैक्टर तक नहीं चलाने देते थे। इस जगह को अधिकार में लेना सबसे बड़ी चुनौती थी। उस वीर के सहयोग से वहाँ ट्रैक्टर भी चला, दीवार भी बनी, निर्माण भी हुआ। सभा की यह जमीन बचाने के लिए उसने सन् 1947 से 2013 तक की फरद व अन्य दस्तावेज एकत्रित किये, अनेक बार थाने व कोर्ट के चक्कर लगाए। फिर भी इस युवक को कब्जाधारी कहा गया। ऐसे लोगों को कार्यसिद्धि से नहीं अपितु कार्य के श्रेय से प्रयोजन होता है। वे कैसे देख सकते हैं कि कार्य का श्रेय कोई दूसरा ले जाए। इसके लिए वे अफवाह भी छोड़ते हैं, निन्दा भी करते हैं, विरोधी गुट से भी मिल जाते हैं, कभी मित्र बन जाते हैं व कभी शत्रु।

लेकिन जीत धर्म की होती है। उस युवक की धर्मनिष्ठा उसका उत्साह राजनीति के बड़े-बड़े धुरन्धरों पर भारी पड़ा। उसकी शहादत पर उसे कोसने वालों का सिर भी उस युवक के कार्यों के आगे झुक गया। ऐसे लोगों की दुर्भावना को निकलने का बहाना चाहिए। अब वह उन लोगों पर निकल रही हैं, जिन्हें वह वीर आदर्श मानता था। **क्रमशः**

वैदिक सत्संग समारोह का आयोजन

आर्यसमाज गोहानामण्डी के **86वें मासिक वैदिक सत्संग समारोह** का आयोजन **दिनांक 14 जुलाई 2013, रविवार** को आर्यसमाज मन्दिर, गुढ़ा रोड, गोहाना (सोनीपत) में आयोजित किया जाएगा। इस सत्संग का आयोजन महीने के दूसरे रविवार को किया जाता है। आज संसार में भौतिक उन्नति खूब हो रही है लेकिन मानव की मानवता का ह्रास होता जा रहा है। संसार में सुख-शान्ति का वातावरण बनाने के लिए परमपिता परमात्मा द्वारा प्रदत्त वेद ज्ञान का प्रचार-प्रसार अति आवश्यक है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु आप सभी से निवेदन है कि सपरिवार एवं इष्ट-मित्रों सहित सभी कार्यक्रमों के समय पर उपस्थित होकर धर्मलाभ उठाकर अनुगृहीत करें।

आमन्त्रित वैदिक विद्वान् : **आचार्य वेदमित्र जी**

पातंजल योगाश्रम, भऊ आर्यपुर, रोहतक

कार्यक्रम-14 जुलाई 2013 प्रातः 8 बजे से 11 बजे तक

यज्ञ, भजन, प्रवचन

निवेदक : आर्यसमाज गोहाना मण्डी (सोनीपत)

कर्म करना अनिवार्य.... पृष्ठ चार का शेष.....

खोदे जा रहा है, पर्वतों को तोड़े जा रहा है, पर्यावरण को दूषित किये जा रहा है। महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि मनुष्य जितना दुर्गन्ध पैदा करता है, उतना यज्ञ आदि से निवारण करना चाहिये। सूर्यदेव से यह शिक्षा लें।

मनुष्य विचारशील, मननशील प्राणी है, उसको चाहिये कि दूसरों की सहायता करता हुआ और समय पड़ने पर उनसे सहायता लेता हुआ, वह कभी न कभी विकट समस्याओं में आ फँसता है कि उस समस्या से निकलना न तो उसकी सामर्थ्य अर्थात् शक्ति में होता है और न कोई दूसरा सहायक दिखाई पड़ता है। ऐसे संकटों में हमारे इष्ट कर्म ही सहायक होते हैं। महर्षि दयानन्द उपदेश करते हैं कि सारा ब्रह्माण्ड एक विस्तृत यज्ञ का रूप धारण किये हुये है। सूर्य और अग्नि आदि दिव्य प्रकाश हैं। परोपकारी सज्जनों को लोक में भी देवता कहते हैं, देवता शब्द का तात्पर्य है दूसरों का कल्याण करने और कल्याण चाहने वाला। सूर्यादि वास्तव में देवता हैं। ये रात-दिन जगत् के कल्याण में लगे रहते हैं। कल्प के आरम्भ से सूर्य और अग्नि तप रहे हैं, पृथिवी घूम रही है, पर्वतों पर सैकड़ों मन बर्फ जम जाती है और गर्मी में पिंघलकर समुद्र में जा पड़ती है। कोई इनके कार्य में सहायक नहीं। ईश्वर की निरन्तर कर्म व्यवस्था से सारा ब्रह्माण्ड कार्यरत है, ईश्वर द्वारा बनाई गई प्रकृति के सभी पदार्थ कल्याणकारक हैं बशर्ते कि मनुष्य उनमें दुष्टता न वर्ते, तो सभी शुद्ध ही शुद्ध रहेगा। ईश्वर के सभी कार्य कल्याणकारी हैं। मनुष्य को भी सदा शुभ कर्मों में वर्तना चाहिये। और सूर्य और पृथिवी से शिक्षा लेनी चाहिये।

उत्तराखण्ड बाढ़पीड़ितों के लिए सहायता की अपील

उत्तराखण्ड में बारीश, बाढ़ और भूस्खलन से आई भीषण आपदा ने विनाश जैसे हालात पैदा कर दिये हैं। तबाही के मंजर रोंगटे खड़े कर देने वाले हैं। सैकड़ों लोग मारे गये हैं, सैकड़ों लापता हैं और हजारों-हजार को मदद की आवश्यकता है। यह समय राष्ट्रधर्म निभाने, पीड़ितों के साथ खड़े होने और उन्हें यह भरोसा दिलाने का है कि हम सब उनके साथ हैं। हम सब मिलकर उत्तराखण्ड के विपदाग्रस्त और असहाय लोगों के जीवन को संबल प्रदान कर सकें, इसके लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा रोहतक ने 'उत्तराखण्ड बाढ़पीडितों की सहायतार्थ कोष' बनाया है तथा पर्याप्तों का सहयोग मिल रहा है।

आप आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक के कार्यालय में नकद या बैंक ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ रोहतक' के नाम से राशि भेज सकते हैं। दानदाताओं के नाम आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के साप्ताहिक समाचार-पत्र 'आर्य प्रतिनिधि' में प्रकाशित किये जायेंगे।

आचार्य बलदेव	आचार्य विजयपाल	सत्यवीर शास्त्री	सूबे. करतारसिंह आर्य
संरक्षक	प्रधान	मंत्री	कोषाध्यक्ष

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

निर्वाचन

आर्यसमाज रामनगर गुड़गाँव का वार्षिक चुनाव सर्वसम्मति से इस प्रकार हुआ—प्रधान-ओमप्रकाश चुटानी, मन्त्री-राधाकृष्ण सोलंकी, कोषाध्यक्ष-ईश्वरलाल कुमार।

—ओमप्रकाश चुटानी, प्रधान

संस्कृति एवं संस्कार भारतीय जीवन का आधार

❑ रामकिशन मलिक एम.ए. एल.एल.बी., रामगोपाल कालोनी, रोहतक

आधुनिक वातावरण के विषय में चिन्तन करने के लिए आज प्रत्येक बुद्धिजीवी को आबद्ध कर दिया है कि भारतीय समाज जो पहले अपने जीवन के सांस्कृतिक मूल्यों के आधार पर स्वच्छ वातावरण में स्वच्छन्द जीवन आम आदमी के जीवनशैली में प्रदर्शित होता रहा है, जिससे समाज में बलात्कार, हत्या, लूट व डकैती जैसी घटनाओं की नगण्यता थी। किन्तु आधुनिक भारतीय समाज में जबसे पाश्चात्य संस्कृति का समावेश हुआ है उसी समय से भारतीय संस्कृति को धीमी गति के विष वमन का कार्य करते हुए दूषित करने का कार्य किया है जिसके कारण दिन-प्रतिदिन सामूहिक बलात्कार, बलात्कार व हत्या, लूट, डकैती जैसे जघन्य अपराधों की अति हो गई है। जो सामाजिक व आर्थिक असमानता भी एक मुख्य कारण है जिसके लिये हमारा राजनैतिक नेतृत्व भी दोष का भागी है जिसे इस विषय में गहन विचार मंथन की आवश्यकता है। मैं आपको पाश्चात्य सभ्यता के विष वमन के मिश्रण के सम्बन्ध में एक उदाहरण का उल्लेख करना यहाँ आवश्यक मानता हूँ। जैसे भारत की राजधानी दिल्ली में J.N.U. में विद्यार्थी संगठन चुनाव में जिस संगठन ने जीत का झण्डा बुलन्द किया उसने अपनी जीत के बाद जश्न के लिए मांस-पार्टी आयोजन का जयघोष किया जो सरासर भारतीय संस्कृति की उल्लंघना का प्रतीक है, जिसको बाद में न्यायप्रणाली के हस्तक्षेप से रोका गया। यहाँ मुझे इस बात का खेद है कि अरे मेरे भारत के भविष्य के निर्माताओ! तुम्हें यह क्या हो गया कि तुम अपनी पूरी भारतीय पवित्र संस्कृति को ही भूल गया? क्या आप यह भी भूल गये कि इस भारत की पवित्र भूमि पर हिन्दू, मुस्लिम, बुद्ध, जैन, पारसी आदि सभी धर्मों का मिश्रित समाज बसता है। इसलिए हमारा किसी भी कार्य को करने से पहले यह विचार करने का परम कर्त्तव्य है कि हम जो कार्य करने जा रहे हैं उससे किसी सम्प्रदाय की भावनाओं को आघात तो नहीं हो रहा है, जो कि आर्यसमाज का मूलमन्त्र है। अत: उक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए मुझे ऐसा आभास हो रहा है कि आधुनिक भारतीय नवयुवक भारतीय संस्कृति के मूल सिद्धान्तों को बिलकुल भुला चुका है जिसके कारण वह किसी की भी भावनाओं के आघात की परवाह किये बिना ही अपनी इच्छा पूर्ति हेतु कोई भी घृणित कार्य करने में संकोच नहीं करता है। इसलिए आधुनिक भारतीय नवयुवक को श्रेष्ठ वैदिक भारतीय संस्कृति की अनभिज्ञता को दूर करने हेतु उनके मार्गदर्शन की अति आवश्यकता है। यह कार्य हमारे समाज-सुधार के बिना संभव नहीं है। इस समाज-सुधार के पथ-प्रदर्शक का केन्द्रबिन्दु आज के राजनैतिक नेतृत्व में ईमानदार, सत्यनिष्ठ व सुकृत एवं सिद्धान्तवादी सोच व भारती संस्कृति सोच के लोगों के बिना असम्भव एवं कठिन कार्य प्रतीत होता है।

यदि समय रहते भारतीय सांस्कृतिक चेतना के नेतृत्व से आधुनिक समाज के नवयुवकों को रूबरू नहीं करवाया गया तो देश व समाज के विघटन को रोकने में घातक सिद्ध होगा। जिस देश की सांस्कृतिक विरासत को नष्ट-भ्रष्ट करने के कुत्सित प्रयास षड्यन्त्र के साथ पाश्चात्य संस्कृति के मिश्रण के माध्यम से किया जा रहा हो तो उन प्रयासों को परवान चढ़ता देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि कोई भी व्यक्ति यह कहने को मजबूर होगा कि इस देश और समाज का रखवाला भगवान् ही होगा। लेकिन कहते हैं कि भगवान् भी तो उसी की सहायता करते हैं जो अपनी सहायता स्वयं करते हैं।

इसलिए मेरा भारत की युवापीढ़ी से निवेदन है कि वे अपने परिवार के अभिभावकों एवं बड़ों के विचारों को सुनें एवं उन्हें वरण करें और अपने जीवन दर्शन का हिस्सा बनावें। वे ऐसा न करें कि कौआ ने देखा हंस को चलना चाहा उसी की चाल अपनी भी भूल गया। फिर वह चाट धूल गया।

मेरे भारतवर्ष के नवयुवक यह बेहाल ना बनाओ अपना।
भारतीय संस्कृति के साथ ही बनाओ देश के सुन्दर भविष्य का सपना।
मेरे भारत के नौजवानों अपनी पूर्व वैदिक संस्कृति व संस्कारों को अपनाओ।
जिस संस्कृति ने सिखाया कि सभी धर्मों के मूल्यों को प्रेमभाव से अपनाओ।
ऐसा करके ही तुम देश व समाज को बचा पाओगे।
भारतीय संस्कृति को अपनाकर ही भ्रष्टाचार व अनाचार को मिटाओगे।
इसलिए भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की विरासत को अपनाना होगा।
इसी को आधार बनाकर ही व्यवस्था परिवर्तन भी लाना होगा।
यदि अब समय रहते ऐसा नहीं किया तो भूल-भुलैया में खो जाओगे।
फिर बाद में तुम अपने भूलवश किये गये कृत्यों पर ही पछताओगे।
देश में आज भ्रष्टाचारियों की चारों तरफ हो गई मौज।
इसीलिए देश की जनता में गरीबी की बढ़ गई फौज।
देश को भ्रष्टाचार मुक्त कराना है।
भारत को विश्वशान्ति मार्गदर्शक बनाना है।
इसी दृढ़निश्चय व संकल्प के साथ व्यवस्था परिवर्तन लाना है।
भारतीय संस्कृति व सभ्यता को बचाना है।

अनमोल भजन

सूबे० करतारसिंह आर्य
सभा-कोषाध्यक्ष

असली ईश्वर एक है, जिसने रचा संसार है।
पंथों में नकली खुदा की, हो रही भरमार है॥
खुद घड़ें पत्थर की मूर्ति, शक्ल दें इंसान की।
कहते हैं अब इसमें शक्ति पूर्ण है भगवान् की॥
जड़ के आगे हाथ जोड़ें, सिर झुकाकर मांगते।
कामना पूरी करेगा, ऐसा नादान जानते॥
क्षीरसागर में कहीं, सुलवा दिया भगवान् को।
चौथे, सातवें आसमां, बिठला दिया भगवान् को॥
सर्वव्यापी ईश्वर को एक देशी कर दिया।
दूर दुनिया से बिठाया और विदेशी कर दिया॥
कोठड़ी में बन्द कर बाहर से ताला जड़ दिया।
क्या अजब भगवान् इनका, कैद जिसको कर दिया॥
किस तरह अज्ञानता मजहबों ने फैलाई है यह।
आपकी भी समझ में, क्या बात कुछ आई है यह॥

(पौराणिक हिन्दू-1)

यह क्या कर रहे हैं, किधर जा रहे हैं,
क्यों अज्ञानी बन, ठोकरें खा रहे हैं॥
किसी धातु या पत्थर के बुत पर,
झुकाते हैं सिर हाथ फैला रहे हैं।
बनाते हैं खुद जिनको हाथों से अपने,
गजब हैं उन्हें ईश बतला रहे हैं।
ना सर्दी ना गर्मी का कुछ होश बुत को,
मगर वस्त्र उसको यह पहना रहे हैं।
लगे न भूख-प्यास जड़ बुत को हरगिज,
मगर लड्डू पेड़ों से बहला रहे हैं।
रिझाते हैं घड़ियाल घण्टे बजाकर,
अजब मूर्खता अपनी दिखला रहे हैं।
जो खुद अपनी रक्षा का मोहताज है बुत,
उसे अपना रक्षक यह जतला रहे हैं।
लुटेरे इन्हें लूटते तोड़ जाते,
वाह! भगवान् इनके लुटे जा रहे हैं।
जो हैं दीन आधीन बेजान पत्थर,
इसे दीन त्राता ये बतला रहे हैं॥
पुराणों की मनघड़न्त गाथा को सुनकर,
ये जड़ बुत को पूजें व पुजवा रहे हैं।
अजब सूझ इनकी निराली है बुद्धि,
कि जड़ वस्तु से भी यह भय खा रहे हैं।
इधर भीख तक इन से मँगवा रहे हैं,
उधर सबका पालक भी बतला रहे हैं।
यह क्या कर रहे हैं, किधर जा रहे हैं,
क्यों अज्ञानी बन, ठोकरें खा रहे हैं॥

भेंटकर्ता : सूबेदार करतारसिंह आर्य,
सेवक आर्यसमाज गोहाना मण्डी (सोनीपत)

आर्य-संसार

आर्य मानव निर्माण शिविर का समापन

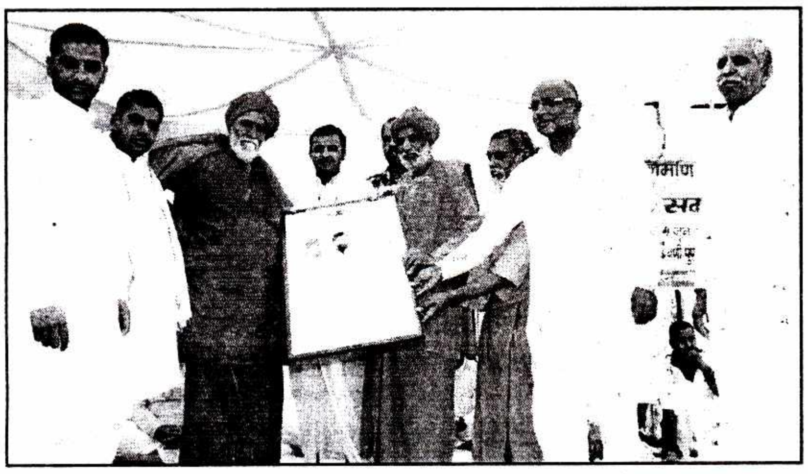

स्वामी शिवानन्द जी को सम्मानित करते हुए पूज्य स्वामी बलेश्वरानन्द जी तथा अन्य

गुरु ब्रह्मानन्द आश्रम बणी पूण्डरी (कैथल) हरयाणा में 2 जून 2013 से 9 जून 2013 तक चल रहे आर्य मानव निर्माण शिविर का समापन आनन्दमय वातावरण में सम्पन्न हुआ।

इस आठ दिवसीय शिविर में राज्य भर से 150 बच्चों ने भाग लिया। देशभर से पधारे विद्वानों ने बच्चों को प्राचीन वैदिक संस्कृति का परिचय करवाया। लाठी, जूडो-कराटे, आसन, व्यायाम आदि का अभ्यास बच्चों को करवाया गया। यज्ञ, योग, सन्ध्या आदि का महत्त्व भी बच्चों को शिक्षकों द्वारा समझाया गया।

शिविर के अन्तिम दिन गुरु ब्रह्मानन्द सरस्वती जी के उत्तराधिकारी शिष्य स्वामी बलेश्वरानन्द सरस्वती जी ने राष्ट्रसेवा के लिये स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी को गुरु ब्रह्मानन्द सम्मान से सम्मानित किया। सम्मान में स्वामी जी द्वारा स्वामी शिवानन्द जी को पगड़ी, शाल, अभिनन्दन-पत्र व 51,000/- रु० (इकावन हजार रुपये) प्रदान किये गये। समस्त कार्यक्रम का संयोजन राजपालसिंह (बहादुर) ने किया व इस पावन बेला में महात्मा दयानन्द सरस्वती, आचार्य चन्द्रदेव आर्य वीर दल के प्रचार मन्त्री, क्षेत्र के विधायक सुलतान जड़ौला, आर्य युवक समाज के प्रधान धर्मदेव विद्यार्थी, मुख्य व्यायाम शिक्षक सन्दीप आर्य, मन्दीप आर्य, अक्षपाल, सन्दीप आर्य प्रधान आर्यसमाज बरसाना मौजूद थे। **—रामपालसिंह, शिविर संयोजक**

सभा के ऋषिलंगर हेतु अन्न व धन संग्रह

पं० रामकुमार आर्य भजनोपदेशक द्वारा वेदप्रचार एवं अन्नसंग्रह—

1. आर्यसमाज सरगथल जिला सोनीपत के मंत्री श्री सज्जन कुमार आर्य द्वारा सभा के ऋषिलंगर हेतु नकद धनराशि कुल योग= 11 हजार रुपये।
2. आर्यसमाज कासण्डा जिला सोनीपत के कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री सतपाल आर्य, रामकुमार शास्त्री, प्रतापसिंह आर्य, वीरेन्द्र आर्य प्रधान भीमसिंह आर्य, इन सबके सहयोग से कुलराशि=9324 रुपये।
3. आर्यसमाज सींक जिला पानीपत के प्रधान डॉ. भौरसिंह आर्य के भरपूर सहयोग से अन्न दस क्विंटल यानी गेहूँ कुल 25 मन।
4. आर्यसमाज कासण्डी जिला सोनीपत के कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री सतबीरसिंह आर्य के भरपूर सहयोग से 16 क्विंटल 10 किलो गेहूँ।

दानी महानुभावों का धन्यवाद भविष्य में भी इसी प्रकार आपका पवित्र दान मिलता रहे। सभा आपकी आभारी रहेगी। धन्यवाद।

श्रावणी उपाकर्म वेदप्रचार सप्ताह

आर्यसमाज फिरोजपुर (मेवात) झिरका पूर्व की भाँति अपना श्रावणी उपाकर्म पर्व (वेदप्रचार सप्ताह) आगामी 22 जुलाई 2013 से 28 जुलाई 2013 वार सोमवार से रविवार तदनुसार गुरुपूर्णिमा से श्रावण बदी षष्ठी विक्रमी सम्वत् 2070 स्थान आर्यसमाज के पावन प्रांगण में आर्यजगत् की भजनोपदेशिका बहिन अंजलि आर्या (करनाल) वैदिक विद्वान् एवं भजनोपदेशक श्री भीष्म जी आर्य (बिजनौर) के पावन सान्निध्य में बड़ी धूमधाम से मनाने जा रहा है। इस कार्यक्रम में आप सभी सादर आमन्त्रित हैं।

—नरदेव आर्य, प्रधान आर्यसमाज फिरोजपुर झिरका (मेवात)

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के 159 में से 134 विद्यार्थी मेरिट में

[सीबीएसई दसवीं में गुरुकुल के 38 छात्रों का सीजीपीए रहा 10 में से 10]

कुरुक्षेत्र 30 मई, 2013 केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड दिल्ली द्वारा बृहस्पतिवार को घोषित दसवीं कक्षा के परीक्षा परिणामों में गुरुकुल कुरुक्षेत्र के 38 छात्रों का सभी विषयों कम्यूलेटिव ग्रेड प्वाइंट ऐवरेज (सीजीपीए) 10 में से 10 रहा। इसके अलावा 134 विद्यार्थियों ने मैरिट सूची में अपना नाम दर्ज कराकर गुरुकुल कुरुक्षेत्र का नाम रोशन किया है। यह जानकारी गुरुकुल के प्राचार्य डॉ. देवव्रत आचार्य ने देते हुए बताया कि गुरुकुल के 159 विद्यार्थियों ने दसवीं कक्षा की परीक्षा दी थी, जिसमें शत-प्रतिशत छात्र उत्तीर्ण रहे तथा 38 छात्रों ने 10 में से 10 सीजीपीए हासिल कर गुरुकुल की प्रतिष्ठा को चार चाँद लगाए। 134 छात्रों ने मैरिट सूची में नाम दर्ज कराया तथा सभी छात्रों ने प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होकर गुरुकुल कुरुक्षेत्र को गौरवान्वित किया है।

गुरुकुल प्रबन्ध समिति के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी, प्राचार्य डॉ० देवव्रत आचार्य व उप-प्राचार्य शमशेर सिंह ने सभी प्रतिभावान छात्रों, आचार्यों व अभिभावकों को उनकी इस उपलब्धि पर हार्दिक शुभकामनाएं व बधाई दी। विद्यार्थियों की उपलब्धि से अभिभूत गुरुकुल के प्राचार्य ने कहा कि यदि छात्र प्रबल इच्छाशक्ति, पूर्ण समझ व परिश्रम के साथ जीवन में कोई भी कार्य करें, तो उन्हें असफलता का सामना नहीं करना पड़ेगा। उन्होंने विद्यार्थियों की सफलता का श्रेय उनके आचार्यों को दिया, जिनके मार्गदर्शन में उन्होंने ये उपलब्धियाँ अर्जित की हैं। उन्होंने विद्यार्थियों से भविष्य में इससे भी उत्कृष्ट करने की प्रतिबद्धता प्रकट की।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र (हरयाणा)

पाखण्ड के विरुद्ध आर्यसमाज..... प्रथम पृष्ठ का शेष.....

को सूचित कर देवें हम (आर्यसमाज सफीदों) सारा व्यय भार वहन करेंगे और प्रचार करवायेंगे। उपस्थिति की दृष्टि से यह बहुत ही सफल आयोजन था जिसमें लगभग 700-800 अबालवृद्ध स्त्री-पुरुष उपस्थित थे। बाद में भोजन की भी बहुत उत्तम व्यवस्था थी, एक हजार से भी अधिक व्यक्तियों ने भोजन ग्रहण किया। सभी ने प्रशंसा की कि भोजन व्यवस्था बहुत ही व्यवस्थित और पर्याप्त थी।

सर्वश्री स्वामी परमानन्द, स्वामी सोमानन्द, स्वामी ज्ञानानन्द, स्वामी वेदानन्द, मा० कपूरसिंह (प्रधान-वेदप्रचार मंडल जिला जीन्द), मा० संजय शर्मा (मन्त्री, वेदप्रचार मंडल जिला जीन्द), सत्यनारायण आर्य (कोषाध्यक्ष, वेदप्रचार मंडल जिला जीन्द), रमेशचन्द्रार्य (जीन्द), ईश्वरचन्द्रार्य (जीन्द), आचार्य अभय (आर्य बाल भारती, पानीपत), आजाद सिंह आर्य मतलौडा (पानीपत), रामकुमार आर्य (प्रधान, आर्यसमाज नरवाना), आचार्य जयगोपाल (नरवाना) आदि आर्य महानुभावों का भरपूर सहयोग हमें मिला। हम इनके आभारी हैं।

इनके अतिरिक्त आर्यसमाज मुआना, सिंघाणा, बूढाखेड़ा, पाजू, कालवा, हाट, बाघडू, गोहानामण्डी, पिल्लूखेड़ा, रोजला, भिड़ताना, सिवाह, जीन्द नगर की सभी आर्यसमाजें, बिरौली, किनाना, बूरा डैहर, घोघड़िया, डाहौला, गुलाढी (संगरूर) सुदकैन तथा आस-पास और दूर-दराज की जिला भर की समाजों ने पूरा-पूरा सहयोग देकर हमें कृतार्थ किया। दानी महानुभावों ने भी उदारता पूर्वक दान देकर आयोजन की सफलता में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। सर्वाधिक आभार तो हम परमपिता परमेश्वर का मानते हैं जिनकी महती कृपा हम पर रही, मौसम की कोई बाधा बीच में नहीं आई। हम पुन: सबके प्रति आभार प्रकट करते हैं और विनम्र अपेक्षा भी करते हैं कि इस प्रकार के आयोजनों का सिलसिला चलता रहे, प्रत्येक जिले में ऐसे महासम्मेलन हों ताकि जनसाधारण को ढोंग, गुरुडम और तथाकथित संतों के भ्रामक दुष्प्रचार से बचाया जा सके। महर्षि दयानन्द जी द्वारा दिखाये गये वेदपथ पर लोगों को चलाया जाये ताकि हमारे घर-परिवार सुखी रहें, हमारा इहलोक भी सुधरे ओर हम मोक्षमार्ग के पथिक भी बन सकें।

सत्यार्थप्रकाश

समाज में फैले अन्धकार, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद, भ्रूणहत्या आदि बुराइयों को मिटाने के लिये सत्यार्थप्रकाश हरयाणा के प्रत्येक घर तक पहुंचाने का यत्न किया जाये। —आचार्य बलदेव

करौंथा धर्मयुद्ध का आँखों देखा हाल

मा० रायसिंह आर्य

टेक—एजी-एजी सुणाऊ धर्मयुद्ध का हाल-
आर्य वीर वीरांगनाओं ने युद्ध में कर्या कमाल।
सुणाऊँ धर्मयुद्ध का हाल.....।

1. गाँव करौंथा छत्री धाम में यज्ञ एक महान् हुआ।
आर-पार की होगी लड़ाई यज्ञ में ऐलान हुआ।
करो या मरो मत ना डरो ऐसा इम्तिहान हुआ।
सबसे पहले बातचीत में प्रशासन आगे आया।
आश्रम को खाली करो आचार्य बलदेव ने फरमाया।
प्रशासन जब ना मान्या तो युद्ध का गया बिगुल बजाया।
रणबांकुरे चाल पड़े ना मरने का कर्या ख्याल।
सुणाऊँ धर्मयुद्ध का हाल.....।

2. सबसे पहले पापी पुलिस ने वीरों पर लाठी चलाई।
वीरों ने लाठी ओट-ओटकर अपनी वीरता खूब निभाई।
गाँव की बहन-बेटियों ने लेडी पुलिस करी पिटाई।
लाठियों पर लाठी बरसी थमने का लिया ना नाम।
बस गाड़ी वाहन रोके हाइवे को कर दिया जाम।
छाती खोल आगे बढ़े जितने आर्यवीर तमाम।
पापी पुलिस ऐसे भागी जैसे भागे श्रृगाल।
सुणाऊँ धर्मयुद्ध का हाल.....।

3. आसू-गैस छोड़ी गई पानी के फव्वारे चले।
आर्यवीर बढ़ते गये करके वारे-न्यारे चले।
माँ-बाप के दुलारे चले और वतन के प्यारे चले।
बन करके झांसी की रानी प्रोमिला जब आगे आई।
एक सांडर्स पापी ने प्रोमिला पर गोली चलाई।
युद्धभूमि में शहीद हुई ऐसी युद्ध में मची तबाही।
अपने पीछे लड़का-लड़की दो दोड़ गई नौनिहाल।
सुणाऊँ धर्मयुद्ध का हाल.....।

4. हुँकार भरके टूट पड़ा संदीप आर्य शाहपुर वाला।
आगे-आगे बढ़ता गया वतन का बनकर मतवाला।
चौथी लड़ाई पानीपत की जीत गया युद्ध का पाला।
आन-बान-शान खातर गुरुकुल का ब्रह्मचारी आया।
गुरुकुलों की शान बढ़ाई संग गुरुओं का मान बढ़ाया।
पापियों की गोली झेलकर धरती आसमान हिलाया।
शहीद होकर उदयवीर ने रावण को दिया उद्दाल।
सुणाऊँ धर्मयुद्ध का हाल.....।

5. जब तक धर्म मनुष्य के धोरे अग्नि जैसा तेज होगा।
जो अग्निरूप धर्म खाता वह बिल्कुल निस्तेज होगा।
बनकर राख गधे लिटें ना बिजली का झेज होगा।
रावणदास ने धर्म खोकर आर्यों से लड़ाई लड़ी।
हुआ आश्रम का सत्यानाश आखिर मुँह की खानी पड़ी।
सत्य की जीत हुई, हुई झूठे पापी की खाट खड़ी।
कहे आर्य दुष्टों का सदा हुआ हाल बेहाल।
सुणाऊँ धर्मयुद्ध का हाल.....।

—मा० रायसिंह आर्य, गांव-पो० घोघड़िया, जिला जीन्द

कृपया ध्यान दें—

उन सभी ग्राहकों से निवेदन है कि जिनका पत्रिका का वार्षिक शुल्क समाप्त हो चुका है वे अपना शुल्क शीघ्रातिशीघ्र भेजें तथा जिन ग्राहकों को पत्रिका नहीं मिल रही वे कृपया अपनी ग्राहक-संख्या एवं पूरा पता, पिनकोड और मोबाइल नंबर साफ-साफ लिखकर भेजें जिससे उन्हें समय पर पत्रिका पहुँच सके।

—व्यवस्थापक

आतंकवाद...

❑ सोनिया आर्या, सोनीपत

आतंकवाद शब्द से ही
एक वाद है ऐसा गहराया,
जिसमें ना उतरा जाए
ना उससे निकला जाए।
आतंकवाद की जड़ें इस देश में
ऐसी है गहराई,
जिसने इस देश में फैलाई
चारों तरफ बुराई।
भटकती युवापीढ़ी ने
अपनी शक्ति को आतंकवाद में
ऐसा है लगाया
जिससे फैली चहुँओर भय का छाया।
इस प्रचण्ड-प्रकोप के कारण
देश की सत्ता भी आज आतंक के
बल पर है चलती।
चुनावों में योग्यता का अभाव
आज पूर्ण रूप से है दिखता,
आम आदमी आज आतंकवाद के
आतंक पर है वोट देता।
वोटों की गिनती में भी आज सच्चाई
का अस्तित्व कहीं नहीं दिखाई देता,
आतंकवाद के बल पर कुर्सी पर
बैठता आज हमारे देश का नेता।
हम चुनते नेता आतंक को
कुछ समझ नहीं आता।
केवल आतंकवाद ही अपना
अस्तित्व पूर्ण रूप से दिखाता।
कुर्सी पर बैठकर इस देश का नेता
आतंकवाद को इस देश में ऐसा है फैलाता,
बचे-खुचे क्षेत्रों में भी भ्रष्टाचार का
प्रचण्ड प्रकोप है नजर आता।
भ्रष्टाचार से आतंकवाद की जड़ें
इस देश में और है गहराई।
आतंकवाद के साथ-साथ
आतंकवाद और भ्रष्टाचार के कारण
प्रत्येक समय में एक आदमी है ऐसा जन्मा,
गांधी हो या अन्ना सभी ने
पलटा इस देश का पन्ना॥
अन्ना के आन्दोलन से प्रभावित
इस देश का युवावर्ग ऐसा है होता,
भ्रष्टाचार और आतंकवाद का
अंत होता नजर नहीं आता॥
आतंकवाद के बढ़ते प्रकोप के कारण
आज युवा पीढ़ी मैदान में ऐसी है आई,
लगता है जैसे अब मिटेगी इस देश में,
फैली आतंकवाद की खाई॥
इस देश में फैला आतंकवाद आज
हर घर में नजर आता।
मर्यादा से बंधे रिश्तों में भी
आज भ्रष्टाचार ही नजर आता॥
आतंकवाद के समाप्त होने पर ही,
इस देश का सुधार है नजर आता॥
अन्यथा तो,
यह देश डूबता ही जाता॥
भ्रष्टाचार के खत्म होने पर ही
खत्म होता है आतंकवाद नजर आता,
और आतंकवाद की समाप्ति पर
भ्रष्टाचार स्वयं समाप्त होता जाता॥

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा में बिक्री हेतु निम्न साहित्य उपलब्ध हैं। कृपया इसका लाभ उठावें।

क्र०	पुस्तक का नाम		मूल्य
1.	प्रो० शेरसिंह : एक प्रेरक व्यक्तित्व	—	20-00
2.	धर्म-प्रवेशिका	—	10-00
3.	धर्म-भूषण	—	12-00
4.	वैदिक सिद्धान्त सार	—	20-00
5.	सत्यार्थप्रकाश	—	30-00
6.	वैदिक उपासना पद्धति	—	8-00
7.	पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती जीवन चरित	—	10-00
8.	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	—	50-00
9.	संस्कारविधि	—	30-00
10.	हैदराबाद सत्याग्रह में हरयाणा का योगदान	—	30-00
11.	पं० गुरुदत्त विद्यार्थी जीवन चरित	—	25-00
12.	महर्षि दयानन्द तथा वेदों पर आक्षेपों का उत्तर	—	15-00
13.	आर्यसमाज का कायाकल्प कैसे हो ?	—	10-00
14.	पंजाब का हिन्दी रक्षा आन्दोलन	—	100-00
15.	स्मारिका-2002	—	10-00
16.	प्राणायाम का महत्त्व	—	15-00
17.	महाराणा प्रताप तथा उनके वंशज	—	10-50
18.	स्मारिका 1987	—	10-00
19.	स्मारिका 1976	—	10-00
20.	अमर हुतात्मा भगत फूलसिंह जीवनी	—	15-00
21.	अमर शहीद पं० रामप्रसाद 'बिस्मिल' जीवनी	—	30-00
22.	स्वामी श्रद्धानन्द जीवनी (कल्याण मार्ग का पथिक)	—	80-00

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **सत्यवीर शास्त्री** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।